Publication Date 01.05.2024
Postal Registration No. G/CHD/0096/2024-26
Registrar of Newspapers of India
Regd. No. 46809/70 I Total Pages 20
Posted at MBU Chandigarh 1st of Every Month

हरियाणा सहकारी प्रकाश

Haryana Sahkari Parkash

वर्ष : 55 | अंक 05 | 01 मई, 2024 | वार्षिक मूल्य : 500/- | प्रति कापी : 50/-

चुनाव का पर्व
DESH KA GARV
LOK SABHA ELECTION 2024

मतदान - लोकतंत्र का अहम योगदान

HARCOFED
Bays No. 49-52, Sector - 2, Panchkula
https://www.harcofed.org.in
harcofed@ymail.com

सम्पादकिय

मतदान - लोकतंत्र का अहम् योगदान

लोकतंत्र का अर्थ–जनता का, जनता के द्वारा तथा जनता के लिए शासन है। एक अच्छा लोकतंत्र लोगों को समाजिक, राजनितिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। भारत विश्व का सबसे विशाल लोकतंत्र है और इसकी रक्षा करना एवं गरिमा बनाये रखना हर भारतीय का मूलभूत कर्तव्य है। इस महान विशाल लोकतंत्र का अहम हिस्सा है, **'मतदान'** जो लोकतंत्र में हमारी भूमिका सुनिश्चित करता है। भारतीय सविधान का अनुछेद 326 हर भारतीय को **मतदान का अधिकार** देता है एवं वर्तमान में 18 वर्ष पूर्ण कर चुका व्यक्ति मतदान का अधिकारी है। अब भारत में 18वीं लोकसभा के चुनाव का दौर चल रहा है जो 19 अप्रैल, 2024 से 1 जून, 2024 तक चलेगा और 4 जून, 2024 को इस ''चुनाव का परिणाम घोषित किया जायेगा। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस चुनाव में **''चुनाव का पर्व–देश का गर्व''** चुनावी थीम रखी गई है। इस चुनाव में मतदान के जरिये अपने देश के प्रति प्यार, समर्पण और जज़्बे को दिखाने का हमारे लिये अच्छा अवसर है। देश में चुनाव के दौरान हर वोट का अपना एक महत्व होता है और हमारा मतदान करना लोकतंत्र की जड़ को ओर मजबूत करता है। लोकतांत्रिक देश में रहकर भी यदि हम अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करते तो हम लोकतंत्र को कमज़ोर करने में एक कड़ी बन रहे हैं।

भारत में निर्वाचन आयोग द्वारा इस चुनाव को सात चरणों में विभाजित किया गया है, जिसमें हरियाणा प्रदेश में **सातवें चरण** में मतदान करना सुनिश्चित हुआ है, जिसकी तारिख **25 मई, 2024** रखी गई है। निर्वाचन विभाग, के अनुसार कोई भी मतदाता केवल तभी वोट डाल सकता है, जब उसका नाम मतदाता सूची में हो। यदि किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची में है लेकिन उसके पास मतदाता पहचान पत्र नहीं है तो वह निर्वाचन आयोग द्वारा निर्दिष्ट अन्य वैकल्पिक पहचान पत्र दिखा कर भी वोट डाल सकता है। हरियाणा के युवा मतदाता जिनका नया वोट बना है, उनको इस चुनाव में पहली बार वोट डाल कर देश के लोकतंत्र को मजबुत करने में अपनी अहम भागीदारी निभानी चाहिए और देश के निमार्ण के प्रति सहयोग करना चाहिए।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस चुनाव में दिव्यांगजनों एवं 85 वर्ष से ऊपर की आयु वर्ग के लोगों के लिये विशेष सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया है, जिसमें यदि कोई दिव्यांग या 85 वर्ष से ऊपर की आयुवर्ग का बुजुर्ग मतदान केन्द्र पर जाने में असमर्थ है तो उसको मतदान केन्द्र तक लेकर जाने और मतदान करवाकर वापस घर छोड़ने की व्यवस्था है और वहीं दिव्यांगों के लिए व्हीलचेयर व अन्य सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई है। हमें इस बात का भी खास ध्यान रखना है कि अपने मत का इस्तेमाल बिना किसी भय और लालच के हो तथा किसी भी राजनितिक दल के दबाव में आये बिना अपनी सूझ–बूझ से कर्मठ व ईमानदार प्रत्याशी को चुना जाये। देश में अच्छा प्रतिनिधि और अच्छी सरकार चुनने का यह सुनहरा मौका है, जिससे हम अपने भविष्य की कमान सही हाथों में दे सकते हैं। मनचाहे प्रत्याशी को वोट देना ही हमारी लोकतंत्र की खूबसुरती को दर्शाता है।

हम स्वतंत्र है और स्वतंत्रा की रक्षा हेतु मतदान करना हमारा परम कर्तव्य बनता है। **हरकोफैड की अपील** है कि चुनाव के इस महा पर्व में आप सभी हिस्सा लेकर इसको सफल बनाये और राष्ट्र निर्माण में एक अहम योगदान दे। देश के इस 18वीं लोक सभा के चुनाव को एक बड़े त्यौहार के रूप में मनाये एवं अपने मताधिकार का उपयोग करके इस चुनावी महापर्व के हवन कुण्ड में अपनी आहूती डालें।

हरियाणा सहकारी प्रकाश

मुख्य संरक्षक
डॉ. राजा सेखर वुंदरू, भा.प्र.से.
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
सहकारिता विभाग, हरियाणा

संरक्षक
राजेश जोगपाल, भा.प्र.से.
रजिस्ट्रार सहकारी समितियां,
हरियाणा

मुख्य सम्पादक
सुमन बल्हारा
प्रबन्ध निदेशक, हरकोफैड

सम्पादक
सौरव शर्मा

सुविचार

केवल बातों से इतिहास में कोई वास्तविक परिवर्तन कभी हासिल नहीं हुआ है।

-सुभाष चंद्र बोस

'हरियाणा सहकारी प्रकाश' में प्रकाशित लेखकों के विचारों के साथ हरकोफैड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के अपने विचार हैं।

हरियाणा सहकारी प्रकाश की विज्ञापन दरें :–

क्र.सं.	विवरण प्रति प्रकाशन	रुपये
1.	पूरा पृष्ठ टाईटल रंगीन	14000/–
2.	पूरा पृष्ठ रंगीन	9000/–
3.	पूरा पृष्ठ श्याम–श्वेत	6000/–
4.	आधा पृष्ठ श्याम–श्वेत	4000/–

इस अंक में पढ़िए

सहकारी विचार गोष्ठी कार्यक्रम 4
देश प्रेम की साकार और व्यावहारिक अभिव्यक्ति है स्वदेशी 5
एक बूंद खून से बच सकती है किसी की जिंदगी 6
हरकोफैड द्वारा विद्यार्थियों के लिए सहकारी जागरूकता कार्यक्रम 7
हरकोफैड द्वारा जैविक खेती विकास कार्यक्रम का आयोजन 8
हरकोफैड द्वारा तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 9
किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम 10
हरकोफैड द्वारा जैविक खेती विकास विषय पर विचार गोष्ठी 10
कविता नर हो, न निराश 11
हरियाणवी गीत (सहकारिता विभाग, हरियाणा) 12
गेहूँ में पोषक तत्व प्रबंधन अपनाकर लें अधिक लाभ 13
गेहूँ में सामान्य पोषक तत्वों की कमी के लक्षण एवं समाधान 14-15
चुटकुले 15
धार्मिक व आयुर्वेद में माना जाता है तुलसी संजीवनी बुटि 16-17
सबके लिए सुगंध 17
बोधकथा अवसर का सदुपयोग 18
विज्ञापन 19

E-MAIL
harcofed@ymail.com
harcopress@gmail.com
Website
https://www.harcofed.org.in

सहकारी विचार गोष्ठी कार्यक्रम

अम्बाला 26 मार्च 2024 :– को हरकोफैड द्वारा कृषि विभाग केन्द्र अम्बाला में हरकोफैड में सहकारी विचार गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें जिले में कार्यरत सभी कार्य संस्थाओं के कर्मचारी व प्रबंध कमेटी के सदस्य ने भाग लिया। इसके साथ–साथ केन्द्रय सहकारी बैंक अम्बाला द्वारा संयुक्त देयता समूह की महिलाओं को ऋण उपलब्ध करवाया गया है। सभी समूह की महिलाओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सरबजीत सिंह, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, विटा प्लांट अम्बाला रहे।

इस कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए श्री अर्जुन सिंह सहकारी शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत) ने उपस्थित सभी सदस्यों व कर्मचारियों को सहकारिता के सिद्धान्तों व सहकारी मूल्यों के बारे में बताते हुए सहकारिता से जुड़कर अपने सामाजिक, आर्थिक उत्थान को कैसे बढ़ाया जा सकता है तथा सहकारिता मे माध्यम से कैसे बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है।

इस अवसर पर अम्बाला केन्द्रीय सहकारी बैंक, अम्बाला के F.L.C श्री सुरजीत सिंह ने अपने सम्बोधन में बताया की संयुक्त देयता समूह की महिलाओं ने समूह के माध्यम से जितनी राशि का लोन लिया है उसकी वसूली सौ प्रतिशत हैं तथा महिलाएं अपना स्वरोजगार अपनाए हुए है।इस कार्यक्रम में सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री जगदीप सिंह ने सहकारिता की सभी स्कीमों के बारे विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की तथा CM PACS के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा की महिलाएं अच्छी नस्ल के पशु पालकर और अपनी महिला दुग्ध समिति बनाकर स्वरोजगार अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकती है तथा वीटा प्लांट अम्बाला द्वारा महिलाओं को समिति बनाने हेतु गांव–2 में जाकर जानकारी प्रदान की जाएगी। अन्त में श्री जगदीप सिंह, शिक्षा अधिकारी हरकोफैड ने आये हुए मुख्य अतिथि, वक्ताओं व सभी कर्मचारियों, प्रबन्ध कमेटी के सदस्यों व उपस्थित संयुक्त देयता समूह की महिलाओं व हरकोफैड के फिल्ड स्टाफ का इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद किया।

देश प्रेम की साकार और व्यावहारिक अभिव्यक्ति है स्वदेशी

-योगेश शर्मा, प्रबन्ध निदेशक, हाउसफैड
मो.-9467523666

स्वदेशी का अर्थ है देश को आत्म निर्भर बनाने की प्रबल भावना। भारत में कृषि के बाद दूसरा बड़ा रोजगार का क्षेत्र है– लघु, कुटीर एवं घरेलू उद्योग। परंतु इन पर विदेशी कंपनियों की मार पड़ने के कारण ये आगे नहीं बढ़ पा रहे है। भारतीयों के विदेशी उत्पादों में मोह के कारण ही अनेक देशी उद्योग बंद हो चुके हैं या मरणासन्न हैं। अलीगढ़ का ताला उद्योग, पानीपत का दरी कंबल उद्योग, अंबाला की मिक्सी, जालंधर के खेल वस्तु, कानपुर का चमड़ा उद्योग, फिरोजपुर का कांच उद्योग, लुधियाना की साईकिल इंडस्ट्री समाप्त हो चुके हैं। उद्योगों में कुशल व अकुशल वर्ग की आवश्यकता होती है। यदि विदेशी वस्तुओं के प्रति रूझान होगा तो देशी उद्योग निश्चित रूप से प्रभावित होंगे व अंतत्वोगत्वा बंद हो जांएगे। भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देने से ही भारतीय उद्योग बचेंगें व रोजगाार सृजन होगा। दैनिक प्रयोग की अनेक वस्तुएँ भारतीय कंपनियों भी बनाती हैं, लेकिन विदेशी कंपनियों के उत्पादों को प्राथमिकता देने के कारण, राष्ट्र की संपति अन्य देशों में जाती है। एक अर्थ में, भारतीय स्वेच्छा से ही भारत को विपन्न बना रहे हैं। हिन्दुस्तान यूनीलीवर एक ब्रिटिश कम्पनी है जिसका भारत में वार्षिक राजस्व लगभग 60,000 करोड़ रूपए है। प्रॉक्टर एंड गैंबल अमेरिका की कंपनी है, जिसकी वार्षिक बिक्री लगभग 15000 करोड़ रूपए है। नेस्ले स्विजरलैंड की कंपनी है जिसका वार्षिक राजस्व 17000 करोड़ रूपए है। कोलगेट अमेरिकन कंपनी है जिसका राजस्व 1800 करोड़ है।

भारतीय पूंजी बहिर्गमन अनेक वर्षों से निर्बाध चल रहा है। ऐसी सैंकड़ो विदेशी कंपनियाँ हैं, जिनके लाभांश के रूप में प्रति वर्ष अरबों–खरबों की राशि भारत से बाहर जाती है।।

विदेशी कंपनियां जो उत्पाद बनाती हैं, वो भारतीय कंपनियां भी बनाती हैं लेकिन भारतीयों की विदेशी उत्पादों को खरीदने में रुचि के कारण भारतीय पूंजी का बहिर्गमन होता है।

जब कोरोना काल में भारत घोर कष्ट में था तो रतन टाटा ने 1500 करोड़ रुपये दान दिए थे। इसी प्रकार, सूर्या रोशनी ने वाणिज्यिक हितों की बलि देकर जनहित में आक्सीजन सिलेंडर देकर सहायता की थी। राष्ट्र के आपत्तिकाल में भारतीय उद्योगपतियों द्वारा सहयोग किए जाने की प्रबल संभावनाएं होती हैं। विपति काल में भारतीय उद्योगपति या कंपनियां ही भारतीयों की निस्वार्थ सहायता कर सकती हैं। दरिद्र नारायण की सेवा हेतु अनेक सामाजिक प्रकल्प भी स्थानीय उद्योगपति ही संचालित करते हैं, न कि विदेशी कंपनियां। किसी त्योहार पर लंगर हमारे आस पड़ोस के लोग लगाते हैं न कि विदेशी कंपनियां।

स्वदेशी का अर्थ किसी का विरोध नहीं हैं बल्कि स्व की भावना को पुष्ट करते हुए देशी कंपनियों को प्राथमिकता देना है जिससे अनावश्यक आयात कम हो, आत्म निर्भरता बढ़े व देश की पूंजी देश में रहे।

स्वदेशी मात्र रोजगार वृद्वि नहीं करती बल्कि आर्थिक असमानता, गरीबी, कुपोषण भुखमरी, अपराध को भी कम करती हैं। स्वदेशी उद्योंगों के उत्थान से ही बेरोजगारी समाप्त हो सकती है।

कंपनी में दो श्रेणियां हैं– स्वामित्व व प्रबंधन। यदि विदेशी कंपनियों के उत्पाद ज्यादा बिकेंगे तो भारतीय, विदेशी स्वामित्व वाली कंपनियों में प्रबंधन करेंगे। यदि भारतीय कंपनियों के उत्पाद ज्यादा बिकेंगे तो उनका स्वामित्व व प्रबंधन दोनो भारतीयों के अंतर्गत होंगे।

यदि स्विजरलैंड की नेस्ले की चॉकलेट ली जाएगी तो इन विदेशी कंपनियों के स्वामी उद्योगपति परिवारों को लाभ है। यदि अमूल की चॉकलेट ली जाएगी तो इस सहकारी संस्थान में दूध सप्लाई करने वाले 36 लाख भारतीयों को लाभ है।

स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देने के अनेक लाभ हैं यथा अनावश्यक आयात कम होगा, भारतीय रुपए की स्थिति मजबूत होगी, भारतीय उद्योगों में जीवन संचार होगा, भारतीय स्वामित्व वाली कंपनियां अधिक होंगी व रोजगार के अवसर बढ़ेंगें। भारत की पूंजी भारत में रहने का अर्थ हैं, यहां की महिलाओं व वंचित वर्ग का आर्थिक सशक्तिकरण। स्वदेशी से ही आर्थिक स्वतंत्रता व आर्थिक संपन्नता संभव है।

एक बूंद खून से बच सकती है किसी की जिंदगीः पं. लोकेश शर्मा
जन चेतना फाऊंडेशन ने लगाया रक्तदान एवं स्वास्थ्य जांच शिविर
41 लोगो नें किया रक्तदान 74 लोगो का जांचा स्वास्थ्य

19 अप्रैल, रोहतक – गांव माड़ौधी जाट्यान स्थित ग्राम सचिवालय में जन चेतना फाऊंडेशन ट्रस्ट के द्वारा रक्तदान उत्सव एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन टऊस्ट की प्रधान रेनू चहल की अध्यक्षता में किया गया। जन चेतना फाऊंडेशन ट्रस्ट की कोषाध्यक्ष दर्शना ग्रेवाल नें बताया कि पीजीआईएमएस में रक्त की कमी को देखते हुए रक्तदान उत्सव का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सदीप क नेतृत्व में आई टीम नें 58 रक्तदाताओं का पंजीकरण करवाया जिसमें से 17 लोगो को टीम के द्वारा अनक्फिट घोषित कर दिया गया जिसके चलते 41 लोग ही रक्तदान कर पाए। प्रधान रेनू चहल नें बताया कि रोहतक के पॉवर हाऊस चौंक स्थित एक निजी अस्पताल के चिकित्सकों की टीम नें 74 लोगों का स्वास्थ्य जांचा और निशुल्क दवाईयां एवं परामर्श उपलब्ध करवाया गया।

जन चेतना फाऊंडेशन ट्रस्ट के सचिव, स्वामी परमानन्द धर्मार्थ टऊस्ट के कोषाध्यक्ष एवं भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व जिला मीडिया प्रभारी पं. लोकेश शर्मा नें कहा कि एक बूंद खून की किसी व्यक्ति की जान बचा सकती है इसलिए रक्तदान कर दूसरे की जिंदगी बचाएं और अपनी नैतिक और मानवीय कर्तव्यों का निवर्हन करें आज के समय में मानव जीवन संहर्षमय और व्यस्त हो गया है इसलिए सडक दुर्घटना और बीमारी में काक्ती संख्या में ऑपरेशन की आवश्यकता होती है जिसमें रक्त की कमी होने के कारण मनुष्य की मौत हो जाती है इसे रोकनें के लिए रक्त की जरूरत होती है इसलिए लोग खुलकर रक्तदान करें और लोगों को जीवनदान दें।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सरपंच अनूप, सरपंच मौसम, डॉ. रीटा शर्मा, रेनू डाबला, अजय खुण्डिया, जयदेव, सुनिल आर्य, प्रशान्त खुण्डिया, अभय, सुरेन्द्र, रजनी, बिजेन्द्र चहल, पूनम, बीरमती, राजकुमार, अजमेर क्तौजी, कृष्ण चौहान, संदीप, ऋतिक, दीपक, मन्नू, आशीष, प्रदीप राठी, मन्जीत, अनीष, राहुल, ममता, पिंकी एवं, बबली सहित अनेक लोग मौजूद रहें।

पं. लोकेश शर्मा, सचिव,
जन चेतना फाऊंडेशन ट्रस्ट

हरकोफैड पंचकूला द्वारा विद्यार्थियों के लिए सहकारी जागरूकता कार्यक्रम

26 मार्च 2024 को दी हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ पंचकुला के तत्वाधान से एम आर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, हसनपूर जिला झज्जर में विधार्थियों के लिए सहकारी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों को सहकारी समितियों की परिभाषा, उद्देश्य, सहकारी मुल्यों व सिद्धान्तों के बारे में विस्तार ने बताया। हरकोफैड के सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यानारायण यादव में आगे बताया कि सहकारी समितियां जमीनी स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक कार्य कर रही है। सहकारी आंदोलन ने ग्रामीण क्षेत्रों के विकाश में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सहकारी समितियों ने लोगों को साहूकार के चंगुल से बाहर निकालने व बिचौलियों के शोषण से बचाने में अहम योगदान दिया है। विद्यार्थियों को सहकारिता के बारे में विस्तार से बताने के बाद सहकारिता विषय पर ही प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसे सही जवाब देने वाले बच्चों को दस्तावेज़ फाईल देकर मनोबल बढ़ाया। कार्यक्रम के अन्त में स्कूल की निदेशक श्रीमती संगीता कोडान व प्रिंसीपल श्री के.एन.दास ने हरकोफैड पंचकुला द्वारा बच्चों के लिए सहकारी ज्ञान वर्धक कार्यक्रम करने लिए सहायक सहकारी शिक्षा अधिकारी श्री सत्यानारायण यादव का धन्यवाद किया।

हरकोफैड द्वारा जैविक खेती विकास कार्यक्रम का आयोजन

30 मार्च 2024 को पैक्स कथूरा जिला सोनीपत में हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ लि0 (हरकोफैड) पंचकूला द्वारा ''सहकारी बीज समितियां'' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर श्री प्रशांत शर्मा, सहायक रजिस्ट्रार समितियां रहे।

श्रीमती अर्चना व सहकारी / अनुदेशक रोहतक ने कार्यक्रम का आरम्भ करते हुए सभी अधिकारियों, वक्ताओं / पैक्स कमेटी मैम्बर, पैक्स कर्मचारी व सहकारी / किसान बन्धुओं का अभिवादन करते हुए आयोजक संस्था हरकोफैड की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और सहकारी समितियों द्वारा किसानों के सामाजिक, आर्थिक उत्थान हेतू चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने एग्रीकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर फण्ड, जीरों बजट प्राकृतिक खेती, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना व जीवन सुरक्षा बीना योजना बारे बताते हुए किसान बन्धुओं से इन योजनाओं का लाभ लेने का आग्रह करते हुए इन योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी लेने हेतू सम्बन्धित विभागों व अधिकारियों के सम्पर्क सूत्र देते हुए इन योजनाओं से जुड़ने हेतू प्रोत्साहित किया।

श्री श्यामवेद, प्रबन्धक ने जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने जैविक खेती के फायदों व नई योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी और किस प्रकार हम इसका लाभ उठाकर जैविक खेती द्वारा उत्पाद बढ़ा सकते है। श्री सुमित भारद्वाज इंस्पैक्टर ने अपने सम्बोधन में गोबर खाद का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग, मशीनरी का साफ रखना, पानी के चैनलों को साफ रखना आदि तरीकों के बारे में बताया और किसान भाइयों को स्वयं ही बीज तैयार करने के तरीके भी बताये जिससे कि कम खर्च आयेगा।

श्री प्रशांत शर्मा, सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां मुख्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए कहा कि कार्यक्रम ज्ञानवर्धक, प्रोत्साहित व प्रेरणादायक रहा। उन्होंने किसान बन्धुओं व मातृ शक्ति से आग्रह किया की किसी के लिए न सही तो स्वयं के स्वास्थ्य के लिए सही जैविक खेती की शुरूआत करें। उन्होंने बताया कि किसानों के विकास के लिए विभाग द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएं प्रदान की जा रही है।

अनुरोध

'हरियाणा सहकारी प्रकाश' राज्य के सहकारी आंदोलन की एक मात्र और ग्रामीण आधार की मुख्य पत्रिका है।

संस्थाओं के पदाधिकारियों व पाठकों से अनुरोध है कि वे सहकारी आंदोलन से सम्बन्धित, सहकारी संस्थाओं की प्रगति व भावी योजनाओं बारे पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार व फोटो भेजें ताकि उसे पत्रिका में उचित स्थान दिया जा सके।

हमें आपके अमूल्य सुझाव पत्रिका की पाठ्यसामग्री के सुधार के लिए आवश्यक हैं।

संपादक

हरकोफैड द्वारा तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 22 मार्च, 2024 से 24 मार्च, 2024 तक गांव विधलाण 26 मार्च 2024 से 28 मार्च, 2024 गांव गुढ़ी कुन्डल व 26 मार्च, 2024 से 28 मार्च, 2024 रामपूर कुन्डल और 29 मार्च, 2024 से 31 मार्च, 2024 तक गांव खांडा सोनीपत में लगभग 125 महिलाओं को जूट बैग बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम हरकोफैड पंचकूला द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ शिक्षा अनुदेशक अर्चना देवी हरकोफैड, रोहतक ने किया। कार्यक्रम में सहकारिता के बारे में चर्चा करते हुए बताया गया कि हरकोफैड हरियाणा प्रान्त में समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समानता के आधार पर प्रचार प्रसार का कार्य कर रही है, इसी के चलते आज आसन में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया।

दो कार्यक्रम प्रशिक्षिका का कार्य श्रीमती निर्मल देवी कर रही है कार्यक्रम का मुख्य कारण गांव की महिलाओं को जूट बैग बनाने सिखा कर आत्मनिर्भर बनाना है क्योंकि वर्तमान में समाज में आत्मनिर्भर बनने की चाह बहनो में देखते ही बन रही है। जूट बैग महिलाओं की पहली पंसद है। महिलाओं को बैग कटिंग का ट्राफ, व्याख्या नोट करवाई व कटिंग कराई, अखबार पर बार–बार कटिंग करने के बाद जूट पर कटिंग कराई गई व सिलना सिखाया गया। मैडम ने बहुत ही अच्छी तरह से बहनों को बैग बनाने सिखायें।

दो कार्यक्रम प्रशिक्षिका का कार्य श्रीमती पूजा देवी कर रही है। कार्यक्रक का मुख्य कारण गांव की महिलाओं को जूट बैग बनाने सिखा कर बहनो में देखते ही बन रही है। जूट बैग महिलाओं की पहली पसंद है। महिलाओं को बैग कटिंग का ट्राफ, व्याख्या नोट करवाई व कटिंग कराई, अखबार पर बार–बार कटिंग करने के बाद जूट पर कटिंग कराई गई व सिलना सिखाया गया। मैडम ने बहुत ही अच्छी तरह से बहनों को बैग बनाने सिखायें।

किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

पलवल 20 मार्च 2024:– पैक्स सौंध जिला पलवल में हरकोफैड पचंकूला द्वारा किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मित्रपाल, शिक्षा अनुदेशक हरकोफैड के द्वारा उपस्थित किसानों को सी.एम. पैक्स, एम. पैक्स सहकारिता के साथ आगे बढ़ने पैक्स को प्रॉफिट में लाने पैक्सों को विभिन्न सेवाओं से सुसज्जित करने आपसी भाई चारा और समुदाय के प्रति निष्ठा के सिद्धान्त का पालन करने बारे बताया।

पशुपालन विभाग, हरियाणा से आए श्री शेर सिंह VLDA ने विभाग द्वारा चलाई जा रही पशु बीमा योजना व पशुओं में गर्मी मौसम मे आने वाली बीमारियों व उनके बचाव बारे व पशुओं को सन्तुलित आहार व छोटे बच्चों के रख–रखाव व उत्तम नस्ल के पशु रखने बारे सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों बारे विस्तारपूर्वक बताया।

पैक्स प्रबन्धक ने किसानों को समय पर ऋण चुकता करने व पैक्स के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। श्री अतर सिंह प्रोग्रेसिव किसान ने किसानों को जैविक खेती अपनाने व कम से कम कैमिक्ल के प्रयोग करने बारे कहा व जैविक खाद बनाने की विधि समझाई।

हरकोफैड द्वारा जैविक खेती विकास विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन

दिनांक 21 मार्च 2024 को कृषि विज्ञान केन्द्र, जिला रोहतक में हरियाणा राज्य सहकारी विकास प्रसंघ लि0 (हरकोफैड) पंचकूला द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र जिला रोहतक के प्रांगण में '' सामाजिक आर्थिक विकास हेतू'' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर श्रीमती मीना सिवाच, सीनियर कोर्डिनेटर कृषि विज्ञान केन्द्र विज्ञान केन्द्र रोहतक रहे।

श्रीमती अर्चना देवी शिक्षा अनुदेशक रोहतक ने कार्यक्रम का आरम्भ करते हुए सभी अधिकारियों, वक्ताओं/पैक्स कमेटी मैम्बर/ पैक्स कर्मचारी व सहकारी/ किसान बन्धुओं का अभिवादन करते हुए आयोजक संस्था हरकोफैड की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

डॉ. जगत सिंह ने जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने जैविक खेती के फायदों व नई योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. रूपेन्द्र ने जीवा अमृत के बारे में किसानों के साथ विस्तृत जानकारी सांझा की कि किस प्रकाश हम इसका लाभ उठाकर जैविक खेती द्वारा उत्पाद बढ़ा सकते हे।

डॉ. मीनाक्षी सांगवान निवारण ने खरपतवार के निवारण के विभिन्न तरीकों की विस्तृत चर्चा किसानों के साथ की। उन्होंने गोबर खाद का प्रयोग, मशीनरी का साफ रखना, पानी के चैनलों को साफ रखना आदि तरीकों के बारे में बताया और हमारे कौन से मित्र कीट होते है ओर कौन से नहीं।

डॉ. मीना सिवाच, सीनियर कोर्डिनेटर, कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक ने मुख्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए कहा कि कार्यक्रम ज्ञानवर्धक, प्रोत्साहित व प्रेरणादायक रहा। उन्होंने किसान बन्धुओं व मातृ शक्ति से आग्रह किया की किसी के लिए न सही तो स्वंय के स्वास्थ्य के लिए ही सही जैविक खेती की शुरूआत करें। उन्होंने बताया की किसानों के विकास के लिए विभाग द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएं प्रदान की जा रही है।

कार्यक्रम में जैविक खेती करने वाले प्रगतिशील किसान श्री जयप्रकाश, श्री रामसिंह व श्री रामनिवास को उपहार भेंट कर प्रोत्साहित भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के कर्मचारियों का विशेष सहयोग रहा।

कविता

नर हो, न निराश

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो

समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो मन को
संभलों कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला

समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो

उठते अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को
निज गौरव का नित ज्ञान रहे

हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोंत्तर गुंजित गान रहे
सब जाय अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को

नर हो, न निराश करो मन को
प्रभु ने तुमको दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो

फिर है यह किसका दोश कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को
किस गौरव के तुम योग्य नहीं

कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को

नर हो, न निराश करो मन को
करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है

मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निश्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो

हरियाणवी गीत
(सहकारिता विभाग, हरियाणा)

कवि
सौरव शर्मा (अत्री)
हरियाणवी लोक गायक
मो. 9646396508

जन जन तक प्रचार करैं सैं, शिक्षा और सहकार की,
आओ सबनै झलक दिखादयूं, सहकारिता विभाग की ।।

आठ संस्था सहकारिता की, न्यारे न्यारे काम करैं,
डेयरीफैड की खासियत, घी मक्खन का उत्पाद करैं,
चावल, चीनी, तेल और आटा, **हैफेड** इसा स्वाद भरै,
10 सहकारी चीनी मिल्लें, **शुगरफेड** संवाद करै,
सारे भाइयों लाभ उठाल्यो, या बात थारे अधिकार की ।।

सहकार से समृद्धि का जिम्मा, सहकारिता विभाग नै ठा राख्या,
लोन माफ हो **हरको बैंक** तै, इसा यू मौका ल्या राख्या,
हाउसफैड तै मकान बणाण का, ऋण उपलब्ध करा राख्या,
सहकारिता आंदोलन तै **हरकोफैड** का नाम बणा राख्या,
हरियाणा मैं लहर चलादी, चारों तरफ सहकार की ।।

लेबरफैड सहकारी विभाग का, रोजगार दिलावै सै,
एच.एस.सी.ए.आर.डी.बी. किसानों को, लॉन उपलब्ध करावै सै,
अधिकारी, सिद्धांत सहकारिता के, जन जन तक पहुंचावै सै,
कारोबार बढ़ै सहकारिता का, नई–नई निति बणावै सै,
सौरव अत्री न्यूं कहरया हो जय जयकार सहकार की ।।

हैफेड हरकोबैंक शुगरफेड डेयरीफैड एचएससीएआरडीबी हाउसफैड हरकोफैड लैबरफैड

गेहूँ में पोषक तत्व प्रबंधन अपनाकर लें अधिक लाभ

पंजाब से लेकर पश्चिम बंगाल तक गंगा के मैदानी क्षेत्रों में धान–गेहूँ एक लोकप्रिय फसल प्रणाली है। धान के बाद उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में लगभग 95 प्रतिशत क्षेत्रफल में गेहूँ की खेती की जाती है। इसका वैश्विक क्षेत्रफल में गेहूँ की खेती की जाती है। इसका वैश्विक क्षेत्रफल लगभग 26 मिलियन हेक्टेयर है, जिसमें अधिकांश दक्षिणी एशियाई देश जैसे भारत, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन शामिल हैं। यह प्रणाली भारत के लगभग 10.5 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में फैली हुई है। इस फसल चक्र के विस्तार में हरित क्रान्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है क्योंकि हरित क्रांन्ति में इन दोनों फसलों की ऐसी किस्में विकसित की गई थी जो अधिक उपज देने वाली, प्रकाश असंवेदी तथा उर्वरक एवं सिंचाई के भी जोर दिया गया। वर्तमान में यह प्रणाली देश की बढ़ती जनसंख्या को भोजन देने में सक्षम है, लेकिन निरंतर एक ही प्रणाली देश की बढ़ती जनसंख्या को भोजन देने में सक्षम है, लेकिन निरंतर एक ही प्रणाली को अपनाने से कई समस्याएं पैदा हो रही हैं–जैसे मृदा उर्वरता में कमी, मृदा में प्रमुख और गौण पोषक तत्वों की कमी मृदा लवणीयता और क्षारीयता में वृद्धि। पोषक तत्व प्रबंधन के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन तकनीक मिट्टी परीक्षण के आधार पर मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा का आकलन करके उत्पादकता के स्तर और मिट्टी के स्वास्थ्य के अनुसार पोषक तत्वों की आपूर्ति सुनिश्चित करना है।

पौधे को सत्रह पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिसके बिना पौधा अपना जीवन चक्र पूरा नहीं कर पाता। ये तत्व हैं कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर, कैल्शियम, मैग्नीशियम, लोहा, जस्ता, मैंगनीज, कॉपर, मोलिब्डिनम, बोरोन, क्लोरीन व निकल। पौधे में विभिन्न तत्वों के अलग अलग कार्य होते हैं। इन सत्रह तत्वों में से कार्बन, हाइड्रोलन, ऑक्सीजन, ऐसे तत्व है जिनकी आपूर्ति पौधा वायुमंडल तथा पानी से कर लेता है। बाकी बचे चौदह तत्वों में से नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर लोहा तथा जस्ता की कमी फसलों में सर्वाधिक देखने को मिलती है क्योंकि इनकी कमी हमारी भूमि में सर्वाधिक पाई गयी है। बाकी शेष बचे तत्वों की पूर्ति मिट्टी से या कार्वनिक खादों से पौधा पूरी कर लेता है। किसी भी फसल में पोषक तत्वों का उपयोग जहां तक संभव हो मिट्टी की जांच के पश्चात सिफारिश के अनुसार ही करना श्रेष्ठ रहता है परन्तु किसी कारणवश अगर किसान भाई ऐसा नहीं कर पाते हैं तो गेहूँ की फसल में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन

हम निम्न अनुसार कर सकते है : अच्छी पैदावार के लिए एजोटोबैक्टर तथा फोरफोटिका की 200 मि.लि. मात्रा 40 कि.ग्रा. प्रति एकड़ बीज के साथ मिलाकर बीजाई करें। गेहूं की बौनी किस्मो के लिए नत्रजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश की मात्रा क्रमशः 60:24:24: कि.ग्रा. प्रति एकड़ तथा 10 कि.ग्रा. प्रति एकड़ जिंक सल्फेट की मात्रा की सिफारिस की गयी है। किसान भाई इन पोषक तत्वों को यूरिया, सिंगल सुपर फॉस्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा जिंक सल्फेट की सहायता से डाल सकते हैं। इसके लिए प्रति एकड़ 130 कि. ग्रा. एकड़ 130 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट, 40 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) की आवश्यक होगी।

गेहूँ में सामान्य पोषक तत्वों की कमी के लक्षण एवं समाधान

नत्रजन : नत्रजन का प्रमुख कार्य पौधे में पर्णहरित निर्माण व कोशिका विभाजन होता है। इसकी कमी से पूरानी पत्तियों का सामान्य रूप से रंग पीला पड़ना शुरू हो जाता है। इसका उपचार नत्रजन उर्वरकों का उपयोग जैसे यूरिया, डी.ए.पी. व देशी खादों का मृदा में उपयोगकरके किया जा सकता है।

फास्फोरस : फास्फोरस का प्रमुख कार्य फसलों में जड़ों में जड़ों के विकास तथा दाने और भूसे के अनुपात को बनाए रखने में सहायक होता है। यह फसल में परिपक्वता लाने में सहायक है। इसकी कमी से पुरानी पत्तियां बैंगनी व गुलाबी रंग की होने लगती हैं तथा इसका समाधान फास्फोरस युक्त में बुवाई से पहले उपयोग करके किया जा सकता है।

पोटेशियम : पोटेशियम का मुख्य कार्य पौधों के अंदर विभिन्न एंजाइमों को सक्रिय करना, फसलों को सुखा झेलने की क्षमता प्रदान करना, रोग व कीटों से लड़ने की क्षमता प्रदान करना, उपज में वृद्धि, शीघ्र परिवक्वता लाने में सहायता करना होता है। इसकी कमी से पुरानी पत्तियों के किनारे सूखना तथा अंत में पूरा पता सूख जाना, बीजों का सिकुड़ना तथा चमक में कमी प्रमुख लक्षण हैं। इसके समाधान हेतु पोटाश युक्त उर्वरकों जैसे म्यूरेट ऑफ पोटाश, सल्फेट ऑफ पोटाश तथा देशी खादों का मृदा में बवाई से पहले उपयोग करके किया जा सकता है।

मैंगनीज : मैंगनीज की कमी के लक्षण गेहूँ को प्रारंभिक वृद्धि अवस्था तथा गेहूँ में बालियां निकलने समय दिखाई देने शुरू होते हैं। पत्तियों पर भूरे पीले रंग की धारियां पत्ती के सिरे से शुरू होकर नीचे की ओर बनती हैं पौधे की बढ़वार कम हो जाती है। बालियां देर से व मुड़ी तुड़ी होकर निकलती हैं। खड़ी फसल में मैंगनीज की कमी लक्षण प्रकट होने पर 0.5 प्रतिशत करें। पहला छिड़काव पहली सिंचाई से पहले तथा बाद के दो से तीन छिड़काव पहली सिंचाई के बाद करें 1 कि.ग्रा. मैंगनीज सल्फेट को 200 लीटर पानी में पिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

लोहा तत्व : लोह तत्व की कमी में नीचे की पत्तियां हरी तथा नई निकलने वाली पत्तियों पीली धारीदार या पूर्णतया पीली हो जाती है। यह टयूबवेल के पानी में बाई कार्बोनेट की अधिकता के कारण प्रकट हो सकती है। गेहूँ की फसल पर 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट घोल के 8 से 10 दिन के अंतर पर लगातार दो से तीन छिड़काव करें। बाई कार्बोनेट को उदासीन करने के लिए पानी की जांच करवाकर आवश्यकता अनुसार जिप्सम डालें। फेरस सल्फेट को हरा कसीस के नाम से भी जाना जाता है। यह हरे रंग का होना चाहिए लाल रंग का नहीं क्योंकि लाल रंग के छिड़कने से लाभ नहीं होगा।

जस्ता (जिंक) : गेहूँ में जस्ते की कमी से प्राय आरंभ में नीचे से तीसरी या चौथी पुरानी पत्ती के मध्य में हल्के पीले रंग के अनियमित धब्बे बन जाते हैं जो कि बाद में बड़े होकर इन पत्तियों से ऊपर व नीचे जाने वाली पत्तियां भी प्रभावित होती है। अधिकतर यह लक्षण पत्तियों के मध्य भाग में बिजाई के 25 से 30 दिन बाद प्रकट होते हैं। जस्ते की अधिक कमी वाले क्षेत्रों में पत्तियों एकदम मुड़ जाती हैं और नीचे गिर जाती हैं। नोक वाला सिरा हरा ही रहता है। लंबे समय तक तापमान अधिक रहने पर कमी के लक्षण देर से प्रकट होते हैं। भूमि में यदि जस्ते की कमी है तब कपास–गेहूँ फसल चक्र में 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ खरीफ फसल में या गेहूँ की बिजाई से पहले आखिरी जुताई पर खेत में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें।

खड़ी फसल में जस्ते की कमी के लक्षण प्रकट होने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट में 2.5 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पहला छिड़काव करें तथा इसके बाद 15 दिन के अंतर पर दो छिड़काव करें तथा इसके बाद 15 दिन के अंतर पर दो छिड़काव करें।

पोषक तत्व प्रबंधन के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन तकनीक :

1. मिट्टी परीक्षण के आधार पर मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा का आकलन करें तथा उत्पादकता के स्तर और मिट्टी के स्वास्थ्य के अनुसार पोषक तत्वों की आपूर्ति सुनिश्चित करें।
2. फसल की जरूरत के हिसाब से आवश्यक पोषक तत्वों की संतुलित आपूर्ति सुनिश्चित करें।
3. अधिकांश किसान डाई अमोनियम फास्फेट उर्वरक का उपयोग करते हैं जिसमें फास्फोरस के साथ नाइट्रोजन की थोड़ी मात्रा होती है। इसे बेसल खुराक में डाला जाना चाहिए।
4. फास्फोरस और पोटाश को फसलों का लगाए जाने से पहले मिट्टी में मिलाया जाना चाहिए तथा उर्वरकों को बीज के नीचे कतार में डाला जाना चाहिए।
5. नाइट्रोजन बढ़ती फसल द्वारा उपयोग किया जाने वालो पोषक तत्व है इसलिए धीमी गति से निकलने वाले नाइट्रोजन युक्त उर्वरक का और नीम लेपित यूरिया का प्रयोग करें।
6. नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का विभाजित प्रयोग विशेष रूप से फसल की वृद्धि के दौरान नाइट्रोजन के प्रभावी उपयोग को बेहतर बनाने और खेत में नुकसान को कम करने में मदद करता है। सिंचाई के पानी के साथ नाइट्रोजन या अन्य पोषक तत्वों को फसलों की त्वरित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए थोड़ी मात्रा में डाला जा सकता है।
7. सरंक्षित कृषि द्वारा मिट्टी में जैविक पदार्थ की मात्रा बढ़ेगी और खेत में अवशेषों को रखने के कारण मृदा स्वास्थ्य एवं पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण में मदद मिलेगी। संरक्षित कृषि आवश्यक बाहरी पोषक तत्वों की मात्रा को कम कर, लंबे समय तक संतुलित तत्व प्रबंधन में मदद करेगी।

उन्नत कृषि तकनीक के अंतर्गत उर्वरक उपयोग के छोट–छोट बदलाव करके सर्वोत्तक उर्वरक प्रबंधन तकनीक द्वारा पोषण तत्वों के नुकसान को कम कर लाभ बढ़ा सकते हैं और पोषक तत्वों के उपयोग से होने वाले किसी भी प्रकार के प्रतिकुल पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा सकता है। मृदा अधिकांश गुणों का आपस में एकीकृत प्रबंधन का परिणाम है, जो फसल उत्पादकता और स्थिरता को निर्धारित करती है उर्वरकों के अपर्याप्त और निरंतर असंतुलित उपयोग से मृदा जैव कार्बन में गिरावट होती है और इस प्रकार मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आई है। गहन उत्पादन प्रणाली में जैविक टिकाऊ उत्पादन प्रणाली के संतुलित और एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन की सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी की बेहतर गुणवत्ता, उत्पादकता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ को बनाए रखना और वृद्धि करना अति आवश्यक है क्योंकि यह मिट्टी के भौति रासायनिक और जैविक गुणों को प्रभावित करता है। अतः समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाकरण किसान भाई मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर बना सकते है।

अर्ज किया है.....
सोच समझ की शादी जिसने
उसने जीवन बिगाड़ लिया
और
चतुराई से की शादी जिसने उसने भी क्या उखाड़ लिया।'''

मैं बचपन में इतना सुन्दर था की
मैडम भी कहा करती थी
वहां से उठ कर मेरे सामने आके बैठो।

मोहब्बत के रास्ते में दर्द ही दर्द मिलेगा
मैं सोच रहा हूँ उस रास्ते पर मेडिकल खोल लू
.....मस्त चलेगा।

टीचर–बच्चों को ज्ञान का पाठ बढ़ाते हुए।
बताओं क्लास में लडाई क्यों नहीं करनी चाहिए ?
गोलू – सर पता नहीं परीक्षा में किसके
पीछे बैठने पड़ सकता है।

पहला कुत्ता – कल मेरे मालिक ने 3.30 बजे
चोर को पकड़ा।
दूसरा कुत्ता – तो उस टाईम तु कहां था ?
पहला कुत्ता – कुत्ता हूँ, इंसान नहीं,
जो सारी रात नेट चलाता रहूँ।
मैं तो भाई, आराम से सो रहा था।

धार्मिक महत्व के साथ आयुर्वेद में भी माना जाता है तुलसी को संजीवनी बुटि

प्राचीन काल से ही यह परंपरा चली आ रही है कि घर में तुलसी का पौधा होना चाहिए। शास्त्रों में तुलसी को पूजनीय, पवित्र और देवी स्वरूप माना गया है, इस कारण घर में तुलसी हो तो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। यदि ये बातों ध्यान रखी जाती हैं तो सभी देवी–देवताओं की विशेष कृपा हमारे घर पर बनी रहती है। घर में सकारात्मक और सुखद वातावरण बना रहता है, पैसों की कमी नहीं आती है और परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है।

यहां जानिए शास्त्रों के अनुसार बताई गई तुलसी के संबंध में 10 खास बातें

शिवलिंग पर तुलसी के पत्ते नहीं चढ़ाना चाहिएः शिवपुराण के अनुसार शिवलिंग पर तुलसी के पत्ते अर्पित नहीं करना चाहिए। इस संबंध में एक कथा बताई गई है। इस कथा के अनुसार प्राचीन काल में दैत्यों के राजा शंखचूड़ की पत्नी का नाम तुलसी था। तुलसी के पतिव्रत धर्म की शक्ति के कारण देवता भी शंखचूड़ को हराने में असमर्थ थे। तब भगवान विष्णु ने छल से तुलसी का पतिव्रत भंग कर दिया। इसके बाद शिवजी ने शंखचूड़ का वध कर दिया।

जब यह बात तुलसी को पता चली तो उसने भगवान को पत्थर बन जाने का श्राप दिया। भगवान विष्णु ने तुलसी का श्राप स्वीकार कर लिया और कहा कि तुम धरती पर गंडकी नदी तथा तुलसी के पौधे के रूप में रहोगी। इसके बाद से ही अधिकांश पूजन कर्म में तुलसी का उपयोग विशेष रूप से किया जाता है, लेकिन शंखचूड़ की पत्नी होने के कारण तुलसी शिवलिंग पर अर्पित नहीं की जाती है।

शास्त्रों के अनुसार तूलसी के पत्ते कुछ खास दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए। ये दिन हैं एकादशी, रविवार और सूर्य या चंद्र ग्रहण काल। इन दिनों में और रात के समय तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ना चाहिए। बिना उपयोग तुलसी ऐसा करने पर व्यक्ति को दोष लगता है। अनावश्यक रूप से तुलसी के पत्ते तोड़ना, तुलसी को कष्ट करने के समान माना गया है।

रोज करें तुलसी का पूजन

हर रोज तुलसी पूजन करना चाहिए। साथ ही यहां बताई जा रही सभी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए। साथ ही, हर शाम तुलसी के पास दीपक लगाना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि जो लोग शाम के समय तुलसी के पास दीपक लगाते हैं, उनके घर में महालक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है

तुलसी से दूर होते हैं वास्तु दोष

तुलसी घर–आंगन में होने से कई प्रकार के वास्तु दोष भी समाप्त हो जाते हैं और परिवार की आर्थिक स्थिति पर शुभ असर होता है।

तुलसी का पौधा घर में हो तो नहीं लगती है बुरी नजर

ऐसी मान्यता है कि तुलसी का पौधा होने से घर वालों को बुरी नजर प्रभावित नहीं कर पाती है। साथ ही, सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा सक्रिय नहीं हो पाती हैं सकारात्मक ऊर्जा को बल मिलता है।

यदि घर में लगा हुआ तुलसी का पौधा सूख जाता है तो उसे किसी पवित्र नदी में या तालाब में या कुएं में प्रवाहित कर देना चाहिए। तुलसी का सूखा पौधा घर में रखना अशुभ माना जाता है।

सूखा पौधा हटाने के बाद तुरंत लगा लेना चाहिए तुलसी का दूसरा पौधा

एक पौधा सूख जाने के बाद तुरंत ही दूसरा तुलसी का पौधा लगा लेना चाहिए। सूखा हुआ तुलसी का पौधा घर में होने से बरकत पर बुरा असर पड़ सकता है। इसी वजह से घर में हमेशा पूरी तरह स्वस्थ तुलसी का पौधा की लगाया जाना चाहिए।

तुलसी है औषधि भी

तुलसी का धार्मिक महत्व तो है, साथ ही आयुर्वेद में इसे संजीवनी बुटि के समान माना जाता है। तुलसी में कई ऐसे गुण होते हैं जो कई बीमारियों को दूर करने और उनकी रोकथाम करने में सहायक हैं। तुलसी का पौधा घर में रहने से उसकी सुगंध वातावरण को पवित्र बनाती है और हवा में मौजूद बीमारी फैलाने वाले कई सूक्ष्म कीटाणुओं को नष्ट कर देती है। तुलसी की सुंगध हमें श्वास संबंधी कई रोगों से बचाती है। साथ ही, तुलसी की एक पत्ती रोज सेवन करने से हम सामान्य बुखार से बचे रहते हैं। मौसम परिवर्तन के समय होने वाली स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से बचाव हो सकता है।

तुलसी की पत्ती सेवन करने से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी बढ़ जाती है, लेकिन हमें नियमित रूप से तुलसी की पत्ती का सेवन करते रहना चाहिए।तुलसी की पत्तों का सेवन करते समय ध्यान रखना चाहिए कि इन पत्तों को चबाए नहीं बल्कि निगल लेना चाहिए। इस प्रकार तुलसी का सेवन करने से कई रोगों में लाभ प्राप्त होता है। तुलसी के पत्तों में पारा धातु के तत्व भी विद्यमान होते हैं जो कि पत्तों को चबाने से दांतों पर लग जाते हैं। यह तत्व दांतों पर लग जाते हैं। ये तत्व दांतों के लिए फायदेमंद नहीं है। अतः तुलसी के पत्तों को बिना चबाए निगलना चाहिए।

प्रियंका (हिंद दस्तक)

सबके लिए सुगंध

अमेरिका के कर्नल ऑल्कार्ट के साथ मिलकर थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना करने वाली रूसी महिला हेलन पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की ने पूरी दुनिया की सैर की और इस घुमक्कड़ी में एक थैला हमेशा उनके साथ होता था। इस थैले में भरे होते थे रंग–बिरंगे, खुशबूदार फूलों के बीज। मेडम ब्लावात्स्की जहाँ कहीं से भी गुजरतीं और खाली जमीन पातीं वहीं वे फूलों के कुछ बीज मिट्टी में दबा देतीं। लोग उनसे पूछते कि जब ये बीज उगेंगे तथा पौधे बड़े होकर फूलों से लद जाएँगे तब आप तो यहाँ नहीं होंगी और आप उन फूलों की खुशबू और रंगों का आनंद नहीं ले पाएँगी तो फिर क्यों जगह–जगह फूलों के बीज बोने में इतना परिश्रम करती हैं? इस पर मेडम ब्लावात्स्की जवाब देतीं, ''यदि मैं इन फूलों को देखकर आनंदित नहीं हो पाऊँगी तो क्या? आप सब तो इन फूलों को देखकर अवश्य प्रसन्न होंगे। अन्य जो लोग उस समय यहाँ आएँगे वे तो आनंदित होंगे। फूल आप सब लोगों के लिए खिलेंगे व अपने रंग और सुगंध बिखेरेंगे।''

वास्तव में जो लोग दूसरों के जीवन में आनंद भर देने के प्रयास में लगे रहते हैं, वे महान होते हैं। ऐसा निष्काम कर्म ही सच्ची आध्यात्मिकता है। यदि हम अपने चारों ओर नजर दौड़ाएँ तो पाएँगे कि ऐसे ही निष्काम कर्मयोगियों के कारण ही हमारा जीवन आनंद से परिपूर्ण है। आज हम जिन सुख–सुविधाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं वे किसी न किसी की देन ही है। आज हम जिन पेड़ों के फल खा रहे हैं वे पेड़ किसी और ने ही हमारे लिए लगाए थे। यदि सब लोग सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए ही कार्य करने लग जाएँ तो ये दुनिया कितनी नीरस और उबाऊ हो जाए। प्रकृति में अपूर्व सौंदर्य व समृद्धि सिर्फ इसलिए है कि वह मुक्तहस्त होकर लुटाती है। पेड़ दूसरों के लिए ही मधुर फलों से लदते हैं। नदियाँ भी मुक्तहस्त होकर अपने जल से सबकी प्यास बुझाती हैं। मनुष्य जिस दिन प्रकृति के इस गुण को अपना लेगा, वह दूसरों के जीवन में आनंद भरने का प्रयास करने लगेगा, निस्संदेह ये दुनिया अत्यंत सुंदर हो जाएगी।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली – 110034

हमारे जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब हम उनका सही उपयोग करके न केवल अपने जीवन को अपेक्षाकृत अधिक आनंदमय बना सकते हैं अपितु समाज और राष्ट्र को भी नई दिशा प्रदान कर सकते हैं लेकिन हम वर्तमान को सुखमय बनाने अथवा उसे पूरी तरह जीने की अपेक्षा भविष्य को सुखमय बनाने के जुगाड़ में ही लगे रहते हैं और इसके लिए कई बार वर्तमान को दुखमय बनाने से भी नहीं चूकते।

एक बार एक व्यक्ति ने घोर तपस्या करके भगवान को प्रसन्न कर लिया। भगवान ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि जीवन में एक बार सच्चे मन से जो चाहोगे वही हो प्राप्त हो जाएगा। उस व्यक्ति के जीवन में अनेक अवसर आए जब वह इस वरदान का उपयोग करके अपने जीवन को सुखी बना सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कई बार भूखों मरने की नौबत आई लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। अनेक ऐसे अवसर भी आए जब वह इस वरदान का प्रयोग करके देश की काया पलट कर सकता था अथवा समाज को खुशहाल बना सकता था लेकिन उसने ऐसा भी नहीं किया क्योंकि वह तो मन में कुछ और ही ठाने बैठा था।

वह उस अवसर की तलाश में था जब मुत्यु आएगी और वह अपने वरदान का उपयोग करके अमर हो जाएगा और दुनिया को बता देगा कि प्राप्त वरदान का उसने कितनी बुद्धिमत्ता से उपयोग किया है। लेकिन मृत्यु तो किसी को सोचने का अवसर देती नहीं। मौत ने चुपके से एक दिन उसे आ दबोचा। उस का वरदान धरा का धरा रह गया। कोई कितनी ही बहुमूल्य वस्तु क्यों न हो उसका समय पर उपयोग कर लेना ही बुद्धिमानी है नहीं तो बाद में पछताने के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। वर्तमान समय और वर्तमान उपलब्ध अवसर का समय पर उपयोग दोनों का ही भरपूर इस्तेमाल करना बुद्धिमान व्यक्ति का लक्षण है।

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी.,
पीतमपुरा, दिल्ली – 110034

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
इफको नैनो यूरिया एवं
इफको नैनो डीएपी का वादा,
उपज अधिक और लाभ ज्यादा
500 मिली
₹600/- में
500 मिली
₹225/- में
IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
NANO
DAP
Nano Di Ammonium Phosphate
LIQUID (8:16:0)
CROP NUTRITION REDEFINED
Seed Primer | Growth Enhancer | Yield Booster
Less Cost, More Profits
Suitable for all Crops
NANO FERTILIZER
FCO APPROVED
IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
NANO
UREA
LIQUID (4% N w/v)
CROP NUTRITION REDEFINED
Environment Friendly
Growth Enhancer
Yield Booster
One Bottle is Equal to One Bag of Urea
Less Cost, More Profits
Suitable for all Crops
NANO FERTILIZER
FCO APPROVED
अधिक जानकारी के लिए निकटतम सहकारी समिति या इफको किसान सेवा केंद्र से सम्पर्क करें।
आज ही ऑर्डर करें : www.iffcobazar.in
आर्डर करने के लिए
स्कैन करें

हरकोफैड द्वारा केन्द्रीय सहकारी बैंक लि0 रेवाड़ी में कर्मचारी कक्षा आयोजन किया गया जिसमें श्री नरेश यादव सेवानिवृत लेखाकार व श्री एस.एस राव, सेवानिवृत सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां ने कर्मचारियों को लेखा सम्बन्धित व सहकारी समितियों के एक्ट बारे जानकारी दी।

26 मार्च 2024 से 28 मार्च 2024 तक गढ़ी (हिसार) में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए घर का सजावटी सामान बनाने का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें की रस्सी से विभिन्न प्रकार के साज–सजावट का समान बनाने सिखाये गये।

हरियाणा राज्य सहकारी विकास फैडरेशन की ओर से सौरव शर्मा संपादक द्वारा हरियाणा सहकारी प्रैस 165–166, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, चण्डीगढ़ से मुद्रित व प्रकाशित तथा कार्यालय बेज नं. 49–52, प्रथम तल, सेक्टर–2, पंचकूला ।
दूरभाष : 0172–2560340, 2560332 हरकोप्रैस : 0172–2637264